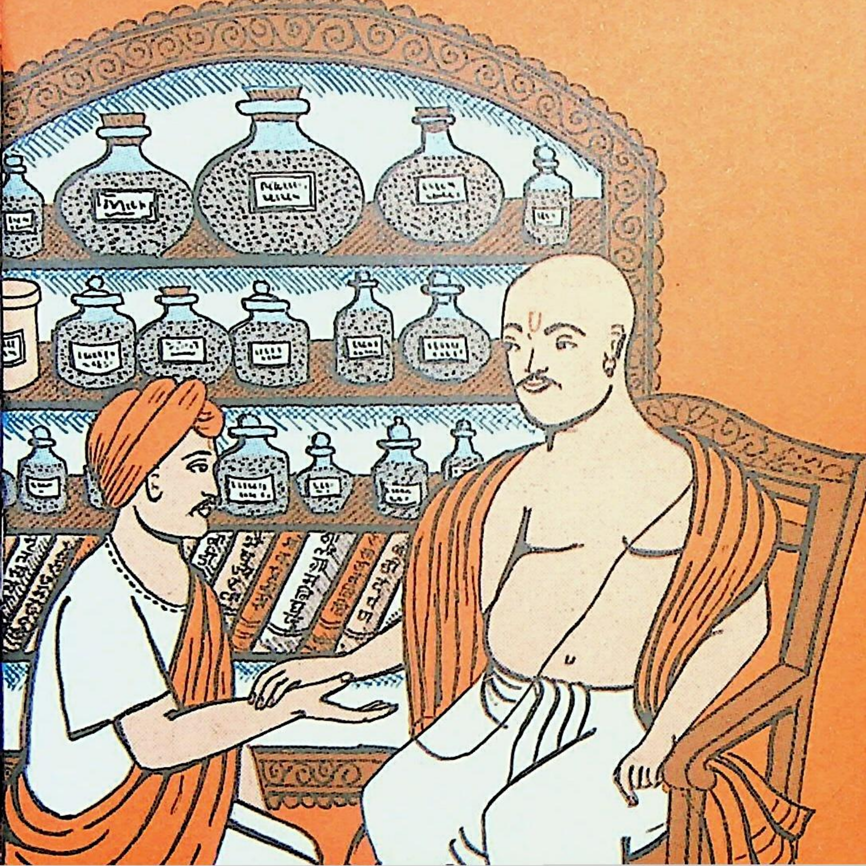
नाडी विज्ञान



॥ श्रीः ॥

श्रीकणादमहर्षिप्रणीतं-

नाडीविज्ञानम् ।

पदकेन वैद्यनारायणदत्तेन निर्मितया

भाषाटीकयोपेतम्

तदिदं

खेमराज श्रीकृष्णदास बम्बई प्रकाशन

संस्करण : दिसंबर २०१५, सवंत् २०७२

मूल्य : २० रुपये मात्र

मुद्रक एवं प्रकाशकः
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers :
Khemraj Shrikrishnadass Prop: Shri Venkateshwar Press, Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.

Web Site : http://www.Khe-shri.com
Email : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj For M/s.Khemraj Shrikrishnadass Proprietors Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400 004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune 411 013

॥ श्रीः ॥

विज्ञापन ।

प्रियपाठकगण !

आजतक अनेक महात्मा विद्वानोंने नाड़ीविज्ञानकी भाषाटीका रची और नूतनभी संग्रह किया परन्तु किसीने सुलभताके साथ प्रकाश नहीं किया न क्रमसे नाडी देखनेका क्रम रखा इसही त्रुटिको देखकर श्रीगुरु महाराज दिल्ली निवासी भिषगाचार्य्य पं० मनोहरलालजीकी कृपासे विद्यार्थियोंके अवलोकनार्थ मैं सरलताके साथ ठीक अर्थ नाडी देखनेका क्रमयुक्त संग्रह करके आप सज्जनोंकी सेवामें प्रकाश करताहूं और प्रार्थना करताहूं यदि जहां कहीँ अशुद्धिया हों तो कृपाकर मुझको ज्ञात करें ।

निवेदक,
वैद्य नारायणदत्त
मेरठ.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ अथ नाडीविज्ञानम् ॥

भाषाटीकोपेतम् ।

यद्वक्त्रेभ्यः पञ्चसंख्यागतेभ्यो वेदा जाता ऋग्यजुःसामरूपाः ॥ सायुर्वेदाऽथर्ववेदाश्च तस्मिन्नास्तां शम्भौ श्रीकणादस्य भक्तिः॥१॥

अर्थ—तिन शिवमहाराजमें कणादआचार्य्यकी भक्ति प्राप्त हो । कैसे शिव हैं जिन्होंके पांच मुखोंसे ऋग्यजुः साम और अथर्ववेद तथा आयुर्वेद ये उत्पन्न हुए हैं, तात्पर्य ऐसे जो शिव हैं तिन्होंमें कणादमहाराजकी भक्ति रहो ॥ १ ॥

वन्दे तं परमानन्दं भक्तानामार्त्तिनाशनम्॥ ममापि संकटं सर्वं हरत्वेव न संशयः ॥२॥

अर्थ—उन परमानंदको प्रणामहो, जो भक्तोंकी पीडाको नाश करतेहैं मेरे भी सब कष्टोंको दूर करो ॥ २॥

सार्द्धत्रिकोट्यो नाड्यो हि स्थूलाः सूक्ष्माश्च देहिनाम् ॥ नाभिकन्दनिबद्धास्तास्तिर्य्यं-गूर्ध्वमधःस्थिताः ॥ ३ ॥

अर्थ—पहिले नाडीकी संख्याको कहतेहैं । शरी-रमें पुरुषोंके साढेतीन करोड नाडी मोटी और बारीक हैं । वो सब नाभिके मूल—(जड)में बंधी हुई हैं।वहांसे तिरछी और ऊपरको और नीचेको स्थित हैं ॥ ३॥

द्वासप्ततिसहस्रं तु तासां स्थूलाः प्रकीर्त्तिताः॥ देहे धमन्यो धन्यास्ताः पंचेन्द्रियगुणावहाः४

अर्थ—साढेतीन करोड नाडियोंमें बहत्तर हजार मोटी नाडी हैं वो शरीरमें रातदिन वायुको धमन कर-नेसे धमनी संज्ञिका कही हैं, पांचों इन्द्रियोके गुणोंको प्राप्त करती हैं।इसवास्ते पंचेन्द्रियगुणावहा हैं॥ ४ ॥

तासां च सूक्ष्मसुषिराणि शतानि सप्त स्यु-स्तानि यैरसकृदन्नरसं वहद्भिः ॥ आप्याय्यते वपुरिदं हि नृणाममीषामम्भःस्रवद्भिरिव सिन्धुशतैः समुद्रः ॥ ५ ॥

अर्थ—बहत्तर हजार नाडियोंमेंसे सातसौ नाडी बारीक मुखवाली हैं वो खाये हुये अन्नके रसको शरीरमें फैलाती हैं जिससे शरीर पुष्ट होताहै ।जैसे नदियोंके मिलनेसे बडा समुद्र बनजाता है;वैसेही खाये हुये अन्नके रससे शरीर बढता है ॥ ५ ॥

आपादतः प्रभृति गात्रमशेषमेषामामस्तका-
दपि च नाभिपुरःस्थितेन ॥ एतन्मृदंग इव
चर्मचयेन नद्धं कायं नृणामिह शिराशतस-
प्तकेन ॥ ६ ॥

अर्थ—मनुष्यका शरीर पैरसे लेकर मस्तक(शिर) पर्यंत अर्थात् संपूर्णही शरीर नाभिमें स्थित एकसौ सात शिराओं करके बंधाहुआ है जैसे चर्मकी डोरियोंसे मृदंग बँधा रहताहै ॥ ६ ॥

सप्तशतानां मध्ये चतुरधिका विंशतिः स्फु-
टास्तासाम् ॥ एका परीक्षणीया दक्षिण-
करचरणविन्यस्ता ॥ ७ ॥

अर्थ–सातसौ नाडियोंमेंभी चौवीस नाडी स्फुट है इन चौवीस नाडियोंमेंसे भी एक नाडी परीक्षाके योग्य है । दहिने हाथ और पावकी ॥ ७ ॥

तिर्य्यक्कूर्मो देहिनां नाभिदेशे वामे वक्त्रं तस्य पुच्छञ्च याम्ये ॥ ऊर्द्धे भागे हस्तपादौ च वामौ तस्याधस्तात्संस्थितौ दक्षिणौ तौ॥८॥

अर्थ–पुरुषोंके नाभिके आश्रय तिरछा कछवेकी तरह नाडीचक्र है तिसका वामेतरफ मुख है, दहिने तरफ पूंछ है ऊपरको बाँये हाथ पैर हैं और नीचेको दहिने हाथ पैर हैं ॥ ८ ॥

वक्त्रे नाडीद्वयं तस्य पुच्छे नाडीद्वयं तथा ॥ पञ्च पञ्च करे पादे वामदक्षिणभागयोः॥ ९ ॥

अर्थ–तिस कछवेके मुंहमें दो नाडी हैं । और दो पूछमें हैं । पांच पांच हाथ और पैरमें हैं । वामे और दहनेमें ॥ ९ ॥

वातं पित्तं कफं द्वंद्वं सन्निपातं रसं त्वसृक् ॥
साध्यासाध्यविवेकं च सर्वं नाडी प्रकाशयेत् ॥ १० ॥

अर्थ–सम्पूर्ण नाडी वात, पित्त, कफ, द्वंद्व दोषोंको और सन्निपातको और रस त्वचा असृक् साध्य और असाध्यको विवेक अर्थात् (ज्ञान) को सब प्रकाश करती है ॥ १० ॥

सर्वासां चैव नाडीनां लक्षणं यो न विंदति॥
मारयत्याशु वै जन्तून्स वैद्यो न यशो लभेत् ११

अर्थ–जो मूढ वैद्य सब प्रकारकी नाडियोंके लक्षणको नही जानता, वह शीघ्र मनुष्योंको मारता है ऐसा वैद्य यशको प्राप्त नहीं होता, इसवास्ते वैद्यको नाडीके देखनेमें बडा यत्न करना चाहिये ॥ ११ ॥

नाडीज्ञानसमयमाह ।

प्रातः कृतसमाचारः कृताचारपरिग्रहम् ॥
सुखासीनः सुखासीनं परीक्षार्थमुपाचरेत् १२॥

अर्थ—अब नाडी देखनेका काल कहते हैं।प्रातः-काल वैद्यको उचित है कि शौचादिक कर्मसे निवृत्त होकर सुखपूर्वक बैठे रोगीको भी उचित है वोभी शौचादि कर्मसे निवृत्त होकर बैठकर वैद्यको नाडी दिखावे ॥ १२ ॥

अन्यच्च ।

स्थिरचित्तः प्रशांतात्मा मनसा च विशा-रदः ॥ स्पृशेदंगुलिभिर्नाडीं जानीयाद्दक्षिणे करे ॥ १३ ॥

अर्थ—स्थिर चित्तवाला और प्रसन्नात्मा मनसे अच्छा विचार करनेवाला बुद्धिमान् वैद्य तीन अंगु-लियोंसे रोगीके दाहिने हाथमें नाडीको जाने ॥ १३ ॥

निषिद्धकालमाह ।

सद्यः स्नातस्य भुक्तस्य क्षुत्तृष्णातपसेविनः॥ व्यायामाक्रांतदेहस्य सम्यङ्नाडी न बुध्यते १४

अर्थ—जिसने जल्दी ही स्नान किया हो वा भोजन

किया हो भूँख लगी हो प्यास हो धूपसे शरीर व्याकुल हो दंड कसरतसे शरीर क्रांत होनेसे मनुष्यकी नाडी अच्छी तरहसे नहीं मालूम होती ॥ १४ ॥

अन्यच्च ।

तैलाभ्यंगे च सुप्ते च तथा च भोजनान्तरे ॥
तथा न ज्ञायते नाडी यथा दुर्गतमा नदी १५

अर्थ–जिसने तैलकी मालिस की हो वा सोते हुयेकी वा भोजनके बाद नाडी नहीं जानी जाती जैसे अगाध भरी हुई नदीका प्रमाण नहीं होता ॥ १५ ॥

नाडीपरीक्षाप्रकारमाह ।

नाडीमंगुष्ठमूलाधः स्पृशेद्दक्षिणगे करे ॥
ज्ञानार्थं रोगिणो वैद्यो निजदक्षिणपाणिना १६

अर्थ–रोगीके दाहिने हाथके अंगुष्ठकी मूलके नीचे वैद्य अपने दाहिने हाथसे रोगके जाननेके लिये नाडीको छुवे ॥ १६ ॥

अन्यच्च ।

सव्येन रोगधृतिकूर्परभागभाजा पीडचाथ दक्षिणकरांगुलिकात्रयेण ॥ अंगुष्ठमूलमधिपश्चिमभागमध्ये नाडीप्रभंजनगतिं सततं परीक्षेत् ॥ १७ ॥

अर्थ–वैद्य दहिनेहाथकी तीन अंगुलियों करके अंगुष्ठकी जड़के पश्चिमभागमें नाडीके द्वारा वायुकी आरोग्य अवस्थामें भी परीक्षा करे । क्याकरके कौहनी स्थानको पकड़कर वहांकी नसका मर्दन करके अंगूठेकी जडमें नाडीको देखे ॥ १७ ॥

प्रायः स्फुटा भवति वामकरे वधूनां पुंसां च दक्षिणकरे तदियं परीक्षा ॥ १८ ॥

अर्थ–प्रायः करके स्त्रियोंके बाँये हाथमे और पुरुषोंके दाहिने हाथमें नाडी स्फुट होती है यह परीक्षा करे ॥ १८ ॥

वातादिस्वभावनाडीक्रममाह ।

आदौ च वहते वातो मध्ये पित्तं तथैव च ॥
अंते च वहते श्लेष्मा नाडिकात्रयलक्षणम् १९

अर्थ-अग्रभागमें नाडीके वायुकी गति होती है । मध्यस्थानमें पित्तकी; अंतमें कफकी गतिको वैद्य जाने ॥ १९ ॥

स्वस्थज्ञानमाह ।

भूलतागमनप्राया स्वच्छा स्वास्थ्यमयी शिरा ॥ २० ॥

अर्थ-रोगरहित पुरुषोंकी नाडी प्रायशः करके केचवेकी चालकी तरह चलतीहै और साफ गति होती है ॥ २० ॥

अन्यच्च ।

प्रातः स्निग्धमयी नाडी मध्याह्नेप्युष्णतान्विता । सायाह्ने धावमाना च चिराद्रोगविवर्जिता ॥ २१ ॥

अर्थ–जिसपुरुषके बहुत दिनसे रोग न हुआहो और अधिक दिनके बीचमें रोग न हो उस पुरुषकी नाडीकी गति प्रातःकाल स्निग्ध होतीहै और मध्याह्नमें उष्णता-करके युक्त होतीहै; सायंकालमें शीघ्रगति होती है २१ ॥

वातादीनां क्रमेण गतिमाह ।

वाताद्वक्रगता नाडी चपला पित्तवाहिनी ॥
स्थिरा श्लेष्मवती ज्ञेया मिश्रिते मिश्रिता भवेत् ॥ २२ ॥

अर्थ–वातसे नाडीकी गति तिरछी होतीहै पित्तसे चपलगति होतीहै कफसे मन्दगति होतीहै द्वन्द्वज-दोषोंसे मिलेहुये लक्षण होतेहैं ॥ २२ ॥

उक्तवातादिसामान्यस्य विशेषमाह ।

सर्पजलौकादिगतिं वदंति विबुधाः प्रभञ्जनां नाडीम् ॥ पित्तेन काकलावकभेकादिगतिं विदुः सुधियः ॥ २३ ॥

अर्थ–पंडितजन कुपितवातसे सर्प और जोंककीगति

नाडीकी कहतेहैं आदि शब्दसे बिच्छु आदिकी गति जानना, पित्तसे विद्वानोंने कौवेकी गति और लावककी मैंडक आदिकी गति कहीहै ॥ २३ ॥

राजहंसमयूराणां पारावतकपोतयोः ॥
कुक्कुटादिगतिं धत्ते धमनीकफसंवृता ॥ २४ ॥

अर्थ–कफके प्रकोपसे नाडीकी गति राजहंस, मोर कपोत पक्षीकी तरह घुंघची, पिंडुकिया, मुर्गेकी चाल-समान चलती है ॥ २४ ॥

द्वन्द्वजस्यापि क्रमेणैवं भेदानाह ।

मुहुः सर्पगतिं नाडीं मुहुर्भेकगतिं तथा ॥
वातपित्तद्वयोद्भूतां प्रवदंति विचक्षणाः ॥२५॥

अर्थ–अब द्वंद्वजदोषोंकी क्रमसे गतिको कहतेहैं बारबार सर्पकी गति चले वा बार २ मेंडककी गति चले; उस नाडीकी गतिको पंडितोंने वात और पित्तकी नाडी कहीहै ॥ २५ ॥

भुजंगादिगतिं नाडीं मयूरादिगतिं तथा ॥
वातश्लेष्मसमुद्भूतां भाषन्ते तद्विदो जनाः २६

अर्थ—जो नाडी सर्पकी चालकी तरह चलती हो वा मोरकी गतिके समान चलती हो वह नाडी वायु और कफके प्रकोपसे जानना ॥ २६ ॥

मंडूकादिगतिं नाडीं मयूरादिगतिं तथा ॥
पित्तश्लेष्मसमद्भूतां प्रवदन्ति महाधियः २७॥

अर्थ—जो नाडी मेंडककी चालकी तरह चलतीहो वा मोरकी तरह चलती हो, उस नाडीकी गतिको बुद्धिमानोंने पित्त और कफकी कही है ॥ २७ ॥

त्रिदोषजामप्याह ।

कदाचिन्मन्दगा नाडी कदाचिच्छीघ्रगा भवेत् ॥ त्रिदोषप्रभवे रोगे विज्ञेया सा भिषग्वरै ॥ २८ ॥

अर्थ—कभी नाडीकी गति मंद हो,कभी शीघ्र हो,ऐसी नाडीकी गतिको वैद्योंने त्रिदोषकी नाडी कहीहै॥ २८॥

अन्यच्च।

लावतित्तिरिवार्तीकगमनं सन्निपाततः ॥२९॥

अर्थ–जो नाडी लवा और तीतर बटेरकी चालकी तरह चलतीहो तो सन्निपातसे जानना ॥ २९ ॥

सन्निपातस्यासाध्यलक्षणमाह।

मन्दं मन्दं शिथिलशिथिलं व्याकुलं व्याकुलं वा स्थित्वास्थित्वा वहति धमनी याति नाशं च सूक्ष्मा ॥ नित्यस्थानात्स्खलति पुनरप्यंगुलीः संस्पृशेद्वा भावैरेवं बहुविधविधैः सन्निपातादसाध्या ॥ ३० ॥

अर्थ–जिस नाडीकी गति धीरे धीरे हो वा शिथिलताके साथ हो वा व्याकुल और ठहर ठहरके चले वा अति सूक्ष्मगति हो और स्थानसे हटकर अंगुलियोंको स्पर्श करके चले तो उस नाडीकी गतिको असाध्य जानना ॥ ३० ॥

अन्यच्च ।

स्थित्वास्थित्वा वहति या सा ज्ञेया प्राण-
घातिनी ॥ तस्य मृत्युं विजानीयाद्यस्येदं
नाडिलक्षणम् ॥ ३१ ॥

अर्थ-जो नाडी ठहर ठहर कर चलतीहै वह प्राणोंको नाशनेवाली जान लेना चाहिये ॥ ३१ ॥

सन्निपाते सामान्यतः सुखसाध्यत्वमाह।

यमियं धातुमाप्नोति तदा नाडी तथागतिः॥
तथाहि सुखसाध्यत्वं नाडीज्ञानेन बुध्यते ३२

अर्थ-सन्निपातमें सामान्यसे सुखसाध्यत्व कहतेहैं । नाडी धमनी जब जिसकालमें जिस धातुको प्राप्त हो तब तिसीकालमें उसहीकी गति हो, तब नाडीके जाननेवाले सुखसाध्यता कहतेहैं ॥ ३२ ॥

अन्यच्च ।

स्पन्दते चैकमानेन त्रिंशद्वारं यदा धरा ॥
स्वस्थानेन तदा नूनं रोगी जीवति
नान्यथा ॥ ३३ ॥

अर्थ-जो एक स्थानमें नाडी तीसवार फडकै तब निश्चय रोगी जीवता है यह निश्चय जानना ॥ ३३॥

ज्वरपूर्वरूपे नाडीगतिमाह ।

अंगग्रहेण नाडीनां भवन्ति मन्थराः प्लवाः ॥
प्लवः प्रबलतां याति ज्वरदाहोऽभिभूतये ॥
सान्निपातिकरूपेण भवंति सर्ववेदनाः ॥३४॥

अर्थ-अब ज्वरके पूर्वरूपमें नाडीकी गति कैसे चलतीहै उसको कहतेहैं-अंगग्रहमें नाडीकी मंद और उत्प्लुतगति रहती है और नाडी प्रबलतासे शीघ्र चलने लगतीहै किसवास्ते ज्वरके दाहसंतापबढानेके वास्ते और सन्निपातरूपमें शरीरमें अनेक प्रकारके कष्ट होतेहैं ३४॥

ज्वरकोपे नाडीगतिमाह ।

ज्वरकोपे च धमनी सोष्णा वेगवती मता ३५॥

अर्थ-ज्वरके प्रकोपसे नाडीकी गति सहित उष्णताके और वेगवाली होती है ॥ ३५ ॥

अन्यच्च ।

ऊष्मा पित्तादृते नास्ति ज्वरो नास्त्यूष्मणा विना ॥ उष्णा वेगधरा नाडी ज्वरकोपे प्रजायते ॥ ३६ ॥

अर्थ—पित्तके विना ऊष्मा नहीं होती और ऊष्माके विना ज्वर नहीं होता इसवास्ते ज्वरके प्रकोपसे नाडीकी गति उष्णताके सहित और वेगवाली होती है॥ ३६ ॥

अथ वातज्वरे नाडीगतिमाह ।

वक्रा च चपला शीतस्पर्शा वातज्वरे भवेत् ३७

अर्थ—वातज्वरमें नाडीकी गति वक्रा अर्थात् जोंक सर्पादिकी गतिके समान और शीघ्र और ठंडेस्पर्श-वाली चलतीहै ॥ ३७ ॥

पित्तज्वरे नाडीगतिमाह ।

भृता च सरला दीर्घा शीघ्रा पित्तज्वरे भवेत् ३८

अर्थ—पित्तज्वरसे नाडीकी गति कठिन और पुष्ट और अवक्रा दीर्घवेगवाली होतीहै ॥ ३८ ॥

कफज्वरे नाडीगतिमाह ।

नाडी तन्तुसमा मन्दा शीतला श्लेष्मदोषजा ३९

अर्थ–कफके ज्वरमें नाडीकी गति अति सूक्ष्म अर्थात् मंद गमन हंस पारावतादिके समान चलती है और शीतलस्पर्श होती है ॥ ३९ ॥

द्वन्द्वज्वरे नाडीगतिमाह ।

चञ्चला तरला स्थूला कठिना वातपित्तजा ४०

अर्थ–वात पित्तके ज्वरमें नाडीकी गति चंचल और शीघ्र,स्थूल,स्तब्ध परिपुष्ट गतिवाली चलतीहै ४०

वातकफज्वरे ।

ईषच्च दृश्यते तूष्णा मन्दा स्याच्छ्लेष्मवातजा ४१

अर्थ–वातकफज्वरमें नाडीकी गति कुछ उष्णा और मंदगतिवाली होतीहै ॥ ४१ ॥

पित्तश्लेष्मज्वरे ।

सूक्ष्मा शीता स्थिरा नाडी पित्तश्लेष्मसमुद्भवा ४२

अर्थ-पित्तकफके ज्वरमें नाडीकी गति सूक्ष्म, कृश, अल्पशीत और स्थिर गतिवाली होतीहै ॥ ४२ ॥

प्रसंगाद्रुधिरकोपजां नाडीमाह ।

मध्ये करे वहेन्नाडी यदि सन्तापिता स्वयम्॥
तदा नूनं मनुष्यस्य रुधिरापूरितामला॥४३॥

अर्थ-जो नाडी निरंतर उष्णतायुक्त चले तो निश्चय दुष्टरक्तसे परिपूरित दोष जानना ॥ ४३ ॥

अजीर्णरूपे नाडीगतिमाह ।

अजीर्णे तु भवेन्नाडी कठिना परितो जडा॥
प्रसन्ना प्रद्रुता शुद्धा त्वरिता च प्रवर्तते॥४४॥

अर्थ-अजीर्ण रोगमें नाडीकी गति कठिन अर्थात् अकोमलताके साथ चलतीहै और दोनों पार्श्वमें जडता होतीहै । और प्रसन्नतामें नाडीकी गति अर्थात् अजीर्ण रहितमें कोमल, जलदी वेगवाली शुद्धताके साथ चलती है ॥ ४४ ॥

अन्यच्च ।

पक्वाजीर्णे पुष्टिहीना मंदंमन्दं वहेज्जडा ॥
असृक्पूर्णा भवेत्कोष्णा गुर्वी सामा गरीयसी॥४५

अर्थ–पकतेहुए अजीर्णमें नाडीकी गति लघुतायुक्त और धीरेधीरे वेगवाली होतीहै और रुधिरपूरितसे नाडीकी गति कुछ उष्णताके साथ और भारी होतीहै ४५

दीप्ताग्निनाडीगतिमाह ।

लघ्वी भवति दीप्ताग्नेस्तथा वेगवती मता॥४६॥

अर्थ–दीप्ताग्नि पुरुषकी नाडीकी गति लाघवताकरके युक्त होती है और वेगवाली होतीहै ॥ ४६ ॥

अग्निमान्द्यधातुक्षयनाडीलक्षणमाह ।

मन्दाग्नेः क्षीणधातोश्च नाडी मंदतरा भवेत्॥४७॥

अर्थ–मन्दाग्नि और क्षीणधातु पुरुषकी नाडी मंदतरा होतीहै अर्थात् अति करके मन्दगति होतीहै॥ ४७ ॥

ग्रहणीरोगे नाडीगतिमाह ।

पादे च हंसगमना करे मंडूकसंप्लुवा ॥
यस्याग्नेर्मन्दता देहे त्वथवा ग्रहणीगदः ॥४८॥

अर्थ—ग्रहणीरोगवाले पुरुषकी दाहिने पैरकी येडीके पास नाडीकी गति हंसके समान हो और हाथके अंगूठेकी जडमें मेडककी गतिकी समान जो नाडी चले तो वैद्यको कहना चाहिये कि या तो अग्निमन्दहै वा ग्रहणीरोग है ४८

अन्यच्च ।

भेदेन शान्ता ग्रहणी गदेन निर्वीर्यरूपा त्वतिसारभेदे ॥ विलंबिकायां प्लुवगा कदाचित्सामातिसारे पृथुता जडा च ॥ ४९ ॥

अर्थ—संग्रहणीरोगके ज्यादा वेगसे नाडी शांत चलती है और अतिसारके ज्यादे वेगसे अतिकोमल-गति होती है और विलंबिका रोगमें नाडी मेंडककी गतिवाली होती है और आमातिसारमें नाडीकी गति पृथु अर्थात् भारी होती है ॥ ४९ ॥

विषूचिकाज्ञाने नाडीगतिमाह ।

निरोधे मूत्रशकृतोर्विड्ग्रहे त्वितराश्रिता ॥
विषूचिकाभिभूते च भवंती भेषवत्क्रमात् ५०

अर्थ--मूत्र और विष्ठा दोनोंके एकसाथ वेगके रोकनेसे वा केवल मलहीके रोकनेसे वा विषूचिकाके होनेसे वा केवल मूत्रके रोकनेसे नाडीकी गति मेंडककी चालवाली चलतीहै ॥ ५० ॥

आनाहमूत्रकृच्छ्ररोगे नाडीगतिमाह ।

आनाहे मूत्रकृच्छ्रे च भवेन्नाडीगरिष्ठता ५१॥

अर्थ--आनाहरोग अर्थात् अफाडेमें वा मूत्र और विष्ठाके निरोधमें वा मूत्रकृच्छ्र रोगमें नाडीकी गति भारी होतीहै ॥ ५१ ॥

शूलरोगे नाडीगतिमाह ।

वातेन शूलेन मरुत्प्लुवेन सदातिवक्रा च शिरा वहन्ती ॥ ज्वालामयी पित्तविचेष्टितेन साध्मानशूलेन च पुष्टिरूपा ॥ ५२ ॥

अर्थ–वायुके शूल करके वातोल्बण शूलसे नाडीकी गति अति वक्रा अर्थात् तिरछी गतिवाली होती है और पित्तयुक्त शूलसे नाडीकी गति गरम होती है और आध्मान सम्बन्धी शूलसे नाडी भारी होतीहै ॥ ५२ ॥

प्रमेहरोगे नाडीगतिमाह ।

प्रमेहे ग्रन्थिरूपा सा सुतप्तात्वामदूषणे ॥ ५३ ॥

अर्थ–प्रमेहरोगवाले पुरुषकी नाडी बीचबीचमें गाँठरूपवाली होती है और आमवात रोग गँठियामें सुतप्ता अर्थात् उष्णगतिवाली होतीहै ॥ ५३ ॥

विषविष्टम्भगुल्मरोगे नाडीगतिमाह ।

उत्पित्सुरूपा विषरिष्टकायां विष्टम्भगुल्मेन च वक्ररूपा ॥ अत्यर्थवातेन अधः स्फुरन्ती उत्तानभेदिन्यसमाप्तकाले ॥ ५४ ॥

अर्थ–विषके खानेवाले पुरुषकी नाडीकी गति उछलती हुई चलतीहै अफारे और गुल्मरोग अर्थात् गोलेकेरोगमें

वायुकी अधिकतासे नाडीगति नीचेको स्फुरण करतीहै और तिरछी गति होतीहै ॥ ५४ ॥

छर्दिवमनरोगे नाडीगतिमाह ।

वान्तस्य शल्याभिहतस्य जन्तोर्वेगावरोधा-
कुलितस्य भूयः ॥ गतिं विधत्ते धमनी
गजेंद्रमरालमालेव कफोल्बणेन ॥ ५५ ॥

अर्थ—वमनरोग अर्थात् कफरोगवाले पुरुषकी नाडी वा जिसके अन्नके साथ कांटा तृणआदि पेटमें जानेसे उससे मलमूत्रादिकके रुकनेसे व्याकुल जो पुरुष उसकी नाडीकी गति हाथी वा हंसकी गतिकी समान चलती है ॥ ५५ ॥

रोगे कालनिर्णयमाह ।

भूलताभुजगाकारा नाडी देहस्य संक्रमात्॥
विशीर्णा क्षीणतां याति मासांते मरणं भवेत्५६

अर्थ—जिस पुरुषकी नाडीकी गति केंचवा वा सर्पकी गतिकी समान चले और क्षीणता हो वा शरी-

रपर सूजन आजावे तो मासके अंतमें अर्थात् दूसरे महीनेमें अवश्य मृत्यु जाननी ॥ ५६ ॥

अन्यच्च ।

स्थित्वा नाडी मुखे यस्य विद्युद्द्योत इवेक्षते ।
दिनैकं जीवितं तस्य द्वितीये म्रियते ध्रुवम्५७

अर्थ-जिस पुरुषकी नाडीकी गति धीरे धीरे चले और एकदम अंगुष्ठकी जडमें बिजलीकी तरह दमक उठी तो अवश्य उस रोगीकी एक दिन छोडकर दूसरे दिन मृत्यु जानना ॥ ५७ ॥

तथा ।

हिमवद्धि यदा नाडी ज्वरदाहेन तापिनाम् ।
त्रिदोषस्पर्शभजतां तदा मृत्युर्दिनत्रयात्५८॥

अर्थ-ज्वरके तापकरके गात्रके व्याकुल होनेसे और त्रिदोषके लक्षण मिलनेसे जब नाडीकी गति ठंडी होजाय तो तीन दिनके बाद चौथा दिन रोगीकी मृत्यु हो ॥ ५८ ॥

अन्यच्च ।

अंगुष्ठमूलतो बाह्ये द्व्यंगुले यदि नाडिका ।
प्रहरार्द्धाद्बहिर्मृत्युं जानीयाच्च विचक्षणः॥५९॥

अर्थ–जब अंगूठेकी जडसे नाडी दो अंगुल अर्थात् बीचकी अंगुलियोंके नीचे चले तो अवश्य चार घडीके बाद उसकी मृत्यु जाननी ॥ ५९ ॥

तथा ।

द्व्यंगुला बाह्यतो नाडी मध्यरेखां वहेद्यदि ।
सार्द्धप्रहरके मृत्युर्जायते नात्र संशयः ॥६०॥

अर्थ–जब नाडी दो अंगुलके बाहर चले तो अवश्य डेड प्रहरके बाद मृत्यु जाननी इसमें संदेह नहीं है६०

अन्यच्च ।

मध्ये रेखासमा नाडी यदा तिष्ठति निश्चला ॥
षड्भिश्च प्रहरैस्तस्य ज्ञेयो मृत्युर्विचक्षणैः६१॥

अर्थ—जब नाडी सूंकी गति अतिचारीक चले और एकजगह ठहर जाय तो उसकी मृत्यु ६ प्रहर पीछे समझना ॥ ६१ ॥

अथ भक्षणज्ञानमाह ।

पुष्टिस्तैलगुडाहारे मांसे च लगुडाकृतिः ॥
क्षीरे च स्तिमितावेगा मधुरे भेकवद्गतिः ६२॥

अर्थ—तैल और गुडकी मिली हुई वस्तुओंके खानेसे नाडीकी गति मोटी मालूम होतीहै और मांसके खानेसे कठोर वा कैडी नाडी होती है और दूधके पीनेसे मंद-वेगवाली नाडी होती है और मीठे भोजनसे मेंडककी गतिवाली होतीहै ॥ ६२ ॥

अन्यच्च ।

रंभागुडवटाहारे रूक्षशुष्कादिभोजनात् ।
वातपित्तार्तिरूपेण नाडीवहतिनिष्क्रमम् ६३॥

अर्थ—केला और गुड ईखके विकारादिक भोजनसे

और पिट्ठीके बडे आदिके खानेसे वा रूखे वा सूखे अन्नके खानेसे नाडीकी गति वातपित्तकी गतिके समान चलती है ॥ ६३ ॥

अन्यच्च ।

अम्लैश्च मधुराम्लैश्च नाडी शीता विशेषतः ॥
चिपिटैर्भृष्टद्रव्यैश्च स्थिरा मन्दतरा भवेत् ६४॥

अर्थ—केवल खट्टे पदार्थ खानेसे नाडीकी गति विशेषतः करके ठंडी होतीहै और चौले भुनेहुये और चने आदिके चाबनेसे नाडीकी मंदगति होतीहै ॥ ६४ ॥

इति श्रीमदिन्द्रप्रस्थस्थवनवारिलालायुर्वेदविद्यालयपरीक्षोत्तीर्णेन मथराष्ट्रनगरनिवासिना वैद्यभूषणोपाधिप्राप्तपदकेन वैद्यनारायणदत्तेन कृता नाडीविज्ञानभाषाटीका समाप्ता ।

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष - ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS